मियादी बुखार (मोतिजला)
Typhoid or Enteric Fever

परिचय (Introduction)-

मियादी बुखार या मोतिजला साल्मोनेला नामक जीवाणु के कारण होता है । इसकी निम्न चार प्रमुख प्रजातियाँ इस रोग का कारण बनती हैं-

- साल्मोनेला टाइफी (Salmonella typhi)
- साल्मोनेला पैराटाइफी 'ए' (Salmonella Paratyphi 'A')
- साल्मोनेला पैराटाइफी 'बी' (Salmonella Paratyphi 'B')
- साल्मोनेला टाइफीम्यूरियम (Salmonella Typhimurium)

परंतु इनमें से साल्मोनेला टाइफी (Salmonella typhi) रोगियों में टाइफायड का प्रमुख कारण है । रोग की तीव्र अवस्था (Acute stage of the disease) में जीवाणु रोगी के मल व मूत्र (Stool & Urine) में उपस्थित रहते हैं, परंतु रोग की जीर्ण अवस्था (Chronic carrier stage) में जीवाणु पित्ताशय व पित्त वाहिका (Gall bladder & bile duct) में मिलते हैं ।

कभी-कभी किडनी (गुर्दे) पेल्विस में भी टाइफायड के जीवाणु काफी समय तक निष्क्रिय पड़े रहते हैं । उपरोक्त जीर्ण अवस्था (Chronic carriers) ही टाइफायड को अधिक फैलाते हैं ।

टाइफायड के नैदानिक लक्षण
(Clinical Features of Typhoid)

प्रारंभिक लक्षण (Initial features)-

टाइफायड के रोगी को तेज बुखार आता है । शाम को बुखार अधिक तेज होता है । रोगी के तीव्र बुखार का स्तर दिनों दिन बढ़ता जाता है और 102^{o}-105^{o} F तक पहुँच जाता है । दिन के अन्य समय में भी बुखार से मुक्त नहीं होता (Step ladder pattern of fever) ।

टाइफायड का बुखार रोगी को उपचार न मिलने पर बहुत दिनों (1-2 माह) तक लगातार बना रहता है।

- बुखार के साथ रोगी को ठंड भी लगती है (Chills with fever)
- बुखार के साथ-साथ रोगी को तीव्र सिरदर्द होता है (Severe headache) । सिरदर्द के अतिरिक्त शरीर के अन्य भागों में भी दर्द होता है ।
- रोगी को भूख नहीं लगती है (Anorexia) ।
- पेट में गड़बड़ी (Abdominal discomfort) प्रारंभ हो जाती है ।
- रोगी को सुस्ती आती है । चेतनावस्था ठीक नहीं रहती है (Droawziness) । साथ ही रोगी बहुत कमजोरी का अनुभव करता है ।
- रोगी को इतना तीव्र बुखार होते हुए भी उसकी हृदय गति (Heart rate) कम होती है (Sinus bradycardia) ।
- कभी-कभी रोगी की नाक से रक्त आने लगता है (Epistaxis) । गला भी खराब हो जाता है ।
- रोगी की जीभ पर लाल ड्रॉप्स की एक परत सी जम जाती है ।
- रोगी को पतले दस्त हो जाते हैं ।

टाइफायड के तीव्र अवस्था के लक्षण
(Clinical Features of Severe Stage of Typhoid)-

- रोगी को पहले से और तेज बुखार आता है (very high temperature) तथा शाम को भी तेज बुखार बना रहता है ।

- रोगी के पेट पर व शरीर के अन्य भागों पर भी हल्के लाल रंग के चकत्ते से उठ आते हैं । यह बहुत अधिक संख्या में निकलते हैं और रोग के सातवें दिन तक दिखाई पड़ने लगते हैं और पूर्णतया प्रकट होने के 3-4 दिन बाद कम होना प्रारंभ हो जाते हैं ।
- इस अवस्था में रोगी की चेतनावस्था (Consciousness) गिरने लगती है । इस अवस्था में रोगी को सिरदर्द नहीं होता, परंतु कई बार रोग की अति तीव्र अवस्था होने पर रोगी को झटके (Seizures) आने लगते हैं, जो उपचार आरंभ करने पर बंद हो जाते हैं ।
- रोगी को पेट में दर्द होने लगता है (Abdominal discomfort)। रोगी की तिल्ली बढ़ जाती है (Splenomegaly) तथा छूने पर दर्द करती है । रोगी का पेट फूल (Gastrites) जाता है ।
- रोगी का रक्तचाप कम होने लगता है (Hypotension) तथा रोगी की स्थिति शॉक (shock) जैसी हो जाती है । इस अवस्था में रोगी की नाड़ी बहुत कमजोर (Thready Pulse) हो जाती है तथा रोगी की ह्रदय गति बढ़ जाती है ।
- रोगी को गहरे हरे पतले दस्त होते हैं ।
- रोग की अंतिम अवस्था में रोगी को बेहोशी आती है । धीरे-धीरे रोगी पूर्णतया बेहोश हो जाता है (Typhoid coma or Typhoid Encephalopathy) ।
- इस स्थिति में रोगी को आँत से रक्तस्राव होता है और कभी-कभी तो टाइफायड के कुछ रोगियों की आँत तक फट जाती है (Intestinal perforation) ।
- ह्रदयशोथ (Myocarditis) हो जाती है ।
- टाइफायड के रोगी की इस अवस्था में साँस बहुत फूलती है । ऐसा उसमें होने वाली निमोनिया (Typhoid Pneumonia) के कारण होता है ।
- रोगी के रक्त का हीमोग्लोबिन बहुत कम हो जाता है (Severe anemia)।
- एलेक्ट्रालायड इंबेलेंस के कारण रोगी की आँत की गति रुक जाती है (Paralytic ileus)।
- टाइफायड के कारण रोगी की पित्त की थैली में सूजन आ जाती है (Typhoid cholecystistis)। यह तीसरे-चौथे सप्ताह में होती है ।
- इसके कारण अस्थि संधियों में सूजन आ जाती है (Typhoid arthritis)।
- टाइफायड के रोगियों में अस्थि संक्रमण हो जाता है (Typhoid osteomyelitis)।
- रोगी को यकृत शोथ हो जाता है (Typhoid hepatitis) ।
- गुर्दों में संक्रमण व सूजन हो जाती है (Typhoid nephritis)।

टाइफायड के रोगी का प्रयोगशाला परीक्षण
(Lab. Investigation of the Typhoid Patient)

रक्त का परिक्षण (Blood Examination)-

- TLC (श्वेत रक्तकर्णिकाओं की कुल संख्या) or (Total leukocyte counts) काफी कम हो जाती है । TLC ↓↓ (Leukopenia) ।
- DLC (Differential Leukocyte count): इन रोगियों में मुख्यतः न्यूट्रोफिल की संख्या बहुत कम हो जाती है (Neutropenia) ।
- हीमोग्लोबिन (Hb%)- रोगी की हिमोग्लोबिन (Hb%) बहुत कम हो जाती है । Hb%↓↓ (Anemia) ।

ब्लड कल्चर (Blood Culture)- यदि टाइफायड के रोगी के रक्त का कल्चर कराया जाय, तो पहले सप्ताह में 90% से अधिक रोगी के कल्चर पॉजिटिव होते हैं ।

क्लॉट कल्चर (Clot culture)- क्लॉट कल्चर ब्लड कल्चर की अपेक्षा अधिक सुग्राही होता है । जिन रोगियों में ब्लड कल्चर नेगेटिव होता है । टाइफायड के उन रोगियों का क्लॉट कल्चर पॉजिटिव आ जाता हैं ।

अस्थिमज्जा कल्चर (Bone marrow culture)- टाइफायड के रोगियों में यह कल्चर सर्वाधिक सुग्राही होता है । जिन रोगियों में उपरोक्त कल्चर निगेटिव आ जाते हैं, उनमे अस्थिमज्जा कल्चर पॉजिटिव आ जाता है और रोग का निदान हो जाता है ।

विडाल टेस्ट (Widal Test)- यह परिक्षण टाइफायड के रोगियों में रोग निदान के लिए सर्वाधिकता से उपयोग में लाया जाता है । इसके लिए ओ(o) तथा एच(H) एंटीबाडी का उपयोग कर रोगी के सीरम 'o' तथा 'H' एंटीजन की उपस्थित मात्रा का पता लगाया जाता है ।

यह परीक्षण रोग के 10वें दिन से पॉजिटिव आना प्रारंभ हो जाता है और 18से 24 दिन के बीच इसका स्तर उच्चतम रहता है ।

यदि परिक्षण के समय एंटीबाडी लेवल (स्तर) बहुत बढ़ा हुआ मिले तो 1/160-1/640 तो यह तुरंत हुए रोग को प्रदर्शित करता है (Representation of acute typhoid disease) ।

1/40 स्तर पर टेस्ट पॉजिटिव होना टाइफायड ज्वर (Typhoid fever) की ओर संकेत करता है । विडाल टेस्ट (Widal Test) का निगेटिव होने से इस तथ्य का प्रमाण बिल्कुल नहीं है कि रोगी को टाइफायड नहीं है ।

- जीर्ण यकृत रोग (Chronic liver disease) ।

पखाने का कल्चर (Stool Culture)-

यह टेस्ट तीसरे सप्ताह में टाइफायड के अधिकांश रोगियों में पॉजिटिव प्रकट होता है, परंतु कुछ रोगियों में यह टेस्ट पहले सप्ताह से ही पॉजिटिव प्रकट होना प्रारंभ हो जाता है ।

मूत्र कल्चर (Urine Culture)-

- टाइफायड के कुछ रोगियों के मूत्र में इसे उत्पन्न करने वाले जीवाणु Salmonella Typhi होते हैं और इन रोगियों का यूरिन कल्चर पॉजिटिव होता है । परंतु यह कम रोगियों में और बहुत कम समय के लिए होता है ।

बायल कल्चर (Bile Culture)-

- टाइफाइड के रोगियों के लिए बायल कल्चर सर्वाधिक सुग्राही है । जीर्ण रोगियों (Chronic cancer Patients) में जब अन्य विधियाँ काम नहीं आती तब यही विधि सार्थक सिद्ध होती है ।